

बढ़ती राहें

(साप्ताहिक)

□ वर्ष 01 □ अंक 17 □ पृष्ठ : 04

□ मूल्य : 4 रुपये

घर्मशाला, 02 मई 2016

हर सोमवार को प्रकाशित

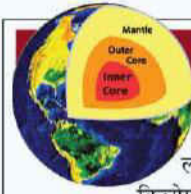
जरूरी है भूकंप से जुड़ी जानकारी

भारतीय उपमहाद्वीप में सर्वाधिक संवेदनशील जोन पांच के अंतर्गत हिमालय के जो क्षेत्र आते हैं उनमें हिमाचल प्रदेश का उत्तरी भाग भी शामिल है। इसमें कांगड़ा, हमीरपुर, मंडी, चंबा का कुछ भाग तथा ऊना का कुछ भाग सम्मिलित है। भूकंप की चर्चा यदा कदा सभी जगह कई प्रकार से होती रहती है, लेकिन आम आदमी तक इसके संबंध में कई आवश्यक जानकारियां उसकी अपनी भाषा में नहीं पहुंच पाती। यह सभी जानते हैं कि भूकंप एक महा भयंकर त्रासदी के रूप में अचानक प्रकट होकर अति भयावह स्थिति उत्पन्न कर जाता है। क्या भूकंप की पूर्व सूचना संभव है। भूकंप के कारण क्या है। इसका प्रभाव कौन सी इमारतों पर और कैसा होता है इत्यादि कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनके उत्तर प्रत्येक जागरूक नागरिक जानना चाहता है। वर्तमान परिस्थितियों में जबकि वैज्ञानिकों द्वारा स्पष्ट रूप से भूकंप की प्रबल संभावनाएं जताई जा रही हैं, प्रत्येक नागरिक को भूकंप से संबंधित अनिवार्य जानकारी होना अति आवश्यक है। इसी उद्देश्य से हम अपने पाठकों के लिए भूकंप से जुड़ा विशेषांक लेकर आए हैं।

-संपादक

त्रासदी से बचना है तो समझें भूकंप की पहली

धर्मशाला। बड़े-बड़े अविष्कार करके हर मुश्किल को वश में करने वाले वैज्ञानिकों के लिए आज भी भूकंप का समय ऐसी पहली है, जिसे सुलझाया नहीं जा सका है। आज भी भूकंप की बात पर हर कोई कांप उठता है। धरती हिलते ही दुनिया रुक की जाती है। बड़े भूकंप जितना नुकसान पहुंचाते हैं, उतना नुकसान शायद ही किसी मानव निर्मित आपदा ने पहुंचाया हो। वैज्ञानिक सदियों से भूगर्भ में छिपे हुए भूकंप के रहस्यों को खोजने को प्रयत्नशील हैं, मगर अभी तक इसका स्टीक अनुमान संभव नहीं हो सका है। हां अत्याधुनिक उपकरणों व सेटेलाइट सिस्टम के चलते भूकंप की संभावनाओं का पता लगाने की तकनीक इजाजत की जा चुकी है। इन संभावनाओं के बीच सिर्फ बचाव के उपाय ही भूकंप की त्रासदी से निपटने का अंतिम हथियार होते हैं, मगर भौतिक साधनों की दौड़ में अंधा मानव



जानें अपनी धरती को

हमारी धरती का अर्धव्यास लगभग 1290 किलोमीटर माना गया है। उसके बाद एक परत बाहरी कोर की आती है, जो लगभग 2200 किमी. अर्धव्यास की मानी जाती है। यह तरल लावे से बनी हुई है। इसके बाहर की परत जिसे मैंटल कहा जाता है यह लगभग 2900 किमी. अर्धव्यास की रहती है। इसमें स्थित पिघला हुआ लावा सदैव चलायमान स्थिति में

रहता है। इसका तापमान लगभग 25 हजार डिग्री सेल्सियस आंका गया है। इसका व्यवहार उबलते हुए पानी की तरह होता है। इसमें अलग-अलग खंडों में गोलाकार गति होती रहती है। बाहरी परत जिसे क्रस्ट कहते हैं 5 से 40 किमी. मोटाई की होती है। इसमें जहां कहीं भी कमजोर सतह होती है, वहां से ठोस चट्टानें गर्म लावे की गोलाकार गति की चपेट में आकर नीचे की ओर धंस जाती हैं।

■ शेष पृष्ठ 2 पर

इस त्रासदी की परवाह किए बिना आंखें मूंद कर इस विभिषिका को चुनौती देने की बचकानी हरकतों में जुटा रहता है। हालांकि जपान जैसे

विकसित उच्च तकनीक वाले देश में जहां बड़े-बड़े भूकंपों से निपटने के लिए उच्च स्तर के प्रयास किए गए हैं, मगर वहां भी भूकंप से होने वाले नुकसान को रोका नहीं जा सका है।

■ शेष पृष्ठ 2 पर

यह है भूकंप का मूल कारण

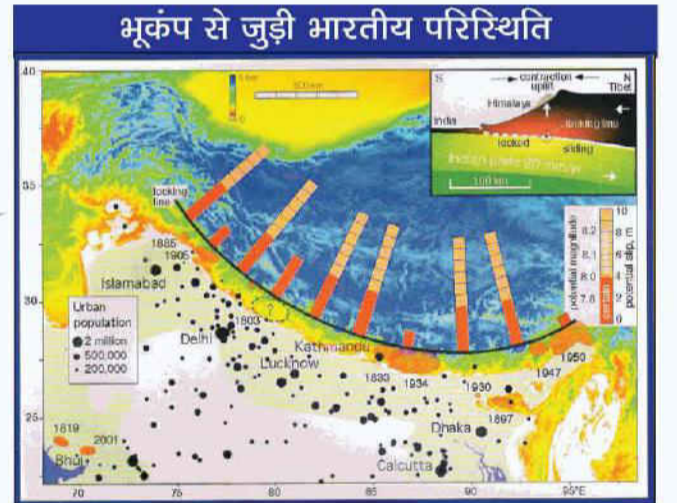
पृथ्वी की बाहरी परत जिसे क्रस्ट कहा जाता है, टुकड़ों में बंटी है, जिन्हें टेक्टोनिक प्लेट कहते हैं। ये प्लेटें लावे के ऊपर तैरती रहती हैं तथा नीचे की गति के साथ-साथ पृथ्वी की दैनिक तथा वार्षिक गति के परिणाम स्वरूप मिली जुली प्रतिक्रिया के अनुसार आगे पीछे सरकती रहती हैं। कभी-कभी ये प्लेटें एक-दूसरे से टकराती हैं और कटोरता या लचीलेपन के आधार पर एक-दूसरे के नीचे या ऊपर सरकती रहती हैं। हालांकि यह गति बहुत ही धीमी रहती है लेकिन दबाव लगातार बढ़ता रहता है और कभी-कभी भयंकर विस्फोट के रूप में परिवर्तित हो जाता है। यह विस्फोट आमतौर पर क्रस्ट में होते हैं और क्रस्ट चूँकि उंडा तथा जमा हुआ भाग है अतः उसमें कंपन पैदा करते हैं। इन्हीं को हम भूकंप कहते हैं।

भूगर्भीय एंठन का परिणाम है भूकंप

मानवीय व्यवस्था को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला भयावह अनुभव भूकंप वास्तव में भूगर्भीय एंठन का

प्रत्यक्ष परिणाम है। पृथ्वी के गर्भ में कई प्रकार की क्रियाएं निरंतर हो रही होती हैं। इनका आभास उसकी सतह पर रहने वाले प्राणियों को सहजता से नहीं हो पाता। आज के युग में जीवन की रफ्तार मनुष्य को एक क्षण रुककर सोचने का समय भी नहीं देती ताकि वह अपने आसपास हो रहे सूक्ष्म परिवर्तनों को गंभीरता से समझ सके। ये सभी परिवर्तन हमें भूगर्भ में होने वाली प्रक्रिया का संकेत देते हैं। विश्व भर के वैज्ञानिक इस प्रयास में निरंतर लगे रहते हैं ताकि भूगर्भ में होने वाली प्रक्रिया की प्रतिक्रिया सतह पर किस तरह से प्रकट होती है।

■ शेष पृष्ठ 2 पर



भूवैज्ञानिकों के अनुसार, कहा जाता है कि जहां आज हिमालय स्थित है वहां कभी एक समुद्र हुआ करता था। इसका नाम टैथीस सागर था। उपरोक्त क्रम के अधीन धीरे-धीरे

भारतीय प्लेट यूरोशियन प्लेट की ओर बढ़ती गई और उससे टकरा गई। यूरोशियन प्लेट काफी कठोर तथा अपनी जगह अडिग थी अतः

■ शेष पृष्ठ 2 पर

जानें भूकंप की शब्दावली

► **मूल केंद्र (फोकस) :** किसी भी फॉल्ट में जहां प्लेट एक भयंकर विस्फोट के कारण सरकना आरंभ करती है उसे फोकस या हाइपोसेंटर कहते हैं। यह पृथ्वी की ऊपरी सतह से काफी कम नीचे होता है।

► **एपिसेंटर या केंद्र:** भूकंप का केंद्र फोकस के ठीक ऊपर पृथ्वी की सतह पर स्थित होता है।

► **फॉल्ट लाईन:** दो प्लेटों के संधि क्षेत्र को जोड़ने वाली जो भूकंपीय दृष्टि से सजग हो उसे फॉल्ट लाईन कहा जाता है। ये आम तौर पर दिखाई नहीं देती। यहां तक कि यदि आदमी इस रेखा के ऊपर भी खड़ा हो तो भी वह नहीं जान पाता कि वह इस रेखा पर खड़ा है। ये रेखाएं उपग्रह से प्राप्त चित्रों में ही स्पष्ट दिखती हैं।

► **भूकंप के माप :** फ्रांसिस प्रो. चार्ल्स रिक्टर ने अपने शोधकार्य के दौरान यह पाया कि भूकंप के केंद्र से एक बराबर की दूरी पर लिए गए सीस्मोग्राम के आंकड़ों के अनुसार बड़े भूकंपों का प्रभाव छोटे भूकंपों की अपेक्षा अधिक था।

■ शेष पृष्ठ 2 पर

संभव नहीं है भूकंप की पूर्व सूचना

पृथ्वी के मैंटल में होने वाली प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से जान पाना संभव नहीं है। अतः इस संबंध में सदियों से परोक्ष रूप से जानकारी प्राप्त करने के लिए अनेक ढंग अपनाए जाते रहे हैं। चीन और जपान जैसे विकसित देशों में इस संबंध में अनथक प्रयास किए गए और अभी भी जारी हैं। जानवरों के व्यवहार में परिवर्तन, कुओं के जलस्तर तथा जल के स्वरूप में परिवर्तन, जलवायु में परिवर्तन प्लेटों के सरकने की



दिशा तथा गति की बारिकी से जांच इत्यादि कई प्रकार के प्रयोग करने के बाद देखा गया कि भूकंप का पूर्वानुमान कुछ हद तक किया जा सकता है, लेकिन

उसका सही समय या तिथि जान पाना फिर भी संभव नहीं है। कई बार पूर्वानुमान के आधार पर जनता को चेतावनी दी गई, बाजार बंद हुए, उद्योगों में काम ठप हुआ लेकिन भूकंप निश्चित समय से काफी समय बाद आया और जब आया तो उसमें हुई हानि से कहीं अधिक उनके व्यापार तथा उद्योगों को हो गई थी और जो अफरातफरी तथा भय का माहौल बना वह अलग।

■ शेष पृष्ठ 2 पर

भूकंप की तीव्रता

एक और स्केल है जिसके आधार पर भूकंप की सघनता मापी जाती है। इसे मोडिफाईड मरकैली इक्विटीसिटी कहा जाता है। यह भूकंप की तीव्रता उससे हुए प्रभाव तथा हानि के आधार पर मापी जाती है। इसका वर्गीकरण से ... तक होता है।



मानवीय लापरवाही बनाती है आपदाओं को भयावह

आपदाएं प्राकृतिक भी होती हैं और मानव निर्मित भी। मनुष्य बिना सोचे समझे ऐसे कई कार्य कर देता है, जो आपदाओं को खुला निर्मंत्रण होते हैं। प्रकृति अपने विधान में किसी प्रकार की छेड़छाड़ कभी बर्दाश्त नहीं करती। पेड़ों का अंधाधुंध कटान, नदियों में अवैध रूप से किया जाने वाला खनन, मकान बनाने के लिए ढलानदार भूमि को समतल करने के लिए की गई खुदाई और पानी के निकास का समुचित प्रबंध किए बिना हुए निर्माण कार्य ऐसे उदाहरण हैं जिन्हें मानव निर्मित आपदाओं की श्रेणी में रखा जा सकता है। और भी ऐसे कई कार्य हैं जिनके कारण कई प्रकार की आपदाओं का सामना करना पड़ सकता है। दूसरी आपदाएं वे हैं जिनके कारण भले कुछ भी हों, वे हमारी व्यवस्था को डांवाडोल करके रख देती हैं। भूकंप, बादलों का फटना, बाढ़, भूस्खलन, चक्रवाती तूफान और जंगलों की आग इत्यादि ऐसी कई घटनाएं हैं, जिन्हें प्राकृतिक आपदा कहा जा सकता है। ऐसी आपदाओं का पूर्वानुमान लगाना संभव नहीं होता इसलिए इनसे बचाव के उपाय करना ही एकमात्र विकल्प होता है। यदि वैज्ञानिक आधार पर देखा जाए तो इन आपदाओं के कारण और इनकी संभावनाओं का अनुमान लगाया जा सकता है। भले ही उनके समय और परिमाण को निश्चित कर पाना संभव न हो सके केवल संभावनाओं के आधार पर बचाव के सही समय पर सही तकनीक का उपयोग करके अपनी सुरक्षा का सुनिश्चित किया जा सकता है।

पहाड़ी क्षेत्रों में तथा नदियों के तट पर किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य करने के कुछ नियम होते हैं। इनका पालन करना हमारे लिए अनिवार्य होता है। यदि कश्मीर में और उत्तराखंड के केदारनाथ इलाके में भवनों के निर्माण के समय इन नियमों का पालन किया गया होता तो इतना भारी नुकसान न उठाना पड़ता। पहाड़ों के ऊपर जब कभी बादल फटने जैसा कुछ होता है तो वहां से निकलने वाले छोटे मोटे नाले भी भयानक रूप धारण कर लेते हैं और आसपास के इलाकों को बुरी तरह तबाह और बरबाद कर देते हैं। भूकंप किसी की जान नहीं लेता जान तो लेते हैं हमारे द्वारा किए गए बेतरतीब निर्माण कार्य। नगर के विभिन्न क्षेत्रों में उचित सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए इन क्षेत्रों की भूवैज्ञानिक स्थिति के अनुरूप ही निर्माण व्यवस्था के सिद्धांत बनाए जाते हैं। कश्मीर और उत्तराखंड में बाढ़ से जो तबाही हुई उसका एक मात्र कारण था नदियों के तट पर बहुमंजिले भवनों का निर्माण। अथाह पानी के बहाव में ये भवन ताश के महलों की तरह ढह गए। पर्यटन से भारी दौलत कमाने के लालच ने लोगों को अंधा बना दिया था जिन्होंने भूमि की क्षमता जाने बिना इन भवनों का निर्माण कर डाला और परिणाम हुआ तबाही और मृत्यु का तांडव। ऐसा ही हुआ जब भुज (गुजरात) में अचानक भयंकर भूकंप ने गणतंत्र दिवस के दिन दस्तक दी। सभी लोग सकते में आ गए। सब ओर तबाही देखकर यह समझ नहीं आ रहा था कि यह हुआ कैसे, तब तक तो कच्छ का वह क्षेत्र भूकंप के लिए संवेदनशील भी नहीं माना जाता था। अब प्रकृति के गर्भ में क्या घटनाक्रम चल रहा है और उसका परिणाम क्या होगा इसका अनुमान लगाया जाना बहुत कठिन है।

हमारे पास केवल एक ही विकल्प है कि हम अपने भवनों का निर्माण सही तकनीक से करें तथा सार्वजनिक स्थलों का प्रबंध ऐसे ढंग से करें ताकि संकट के समय उनका उपयोग किया जा सके। सड़कें चौड़ी और व्यवधान रहित हों ताकि आपदा के समय प्रबंधन में कठिनाई पेश न आए। पानी और बिजली जहां हमारे लिए जीवन की सबसे बड़ी सुविधाएं हैं वहीं इनका कुप्रबंध जानलेवा हो जाता है। भूकंप के दौरान बिजली का लाइन टूटने से सबसे ज्यादा आग लगने का खतरा रहता है। शहरों में मकान तारों से नजदीक खड़े कर दिए जाते हैं जो उन पर गिर कर तबाही का सबब बनते हैं। इसलिए यह जरूरी है कि कोई भी निर्माण कार्य आरंभ करने से पूर्व इन सभी पहलुओं पर विचार किया जाए और यह तभी संभव है जब व्यवस्था का संचालन किसी नियम के अनुसार किया जाए।

जरूरी है सुव्यवस्थित भूमि उपयोग

बहुत सी व्यवस्थाएं ऐसी भी हैं जो निर्माणकर्ता के अपने हाथ में नहीं होतीं। इनके लिए दूसरों के सहयोग की जरूरत पड़ सकती है। ऐसे में स्थानीय पंचायत तथा आसपड़ोस के लोगों के साथ तालमेल भी आवश्यक होता है। जब जब इनका समाधान पूर्वाग्रहों के आधार पर या स्वार्थ परक ढंग के किया जाता है तो उससे हमारी सामाजिक व्यवस्था में अशांति व असंतोष पैदा होता है और संकट बढ़ जाता है। आवश्यक है कि इनके समाधान के लिए समुचित सर्वमान्य व्यवस्था का गठन किया जाए।

भूकंप के बारे में यह कह पाना कतई संभव नहीं कि उसका केंद्र कहां रहेगा तथा उसका परिमाण क्या होगा और किसी विशेष स्थान पर उसका प्रभाव कैसा होगा। पिछले अनेक भूकंपों का अध्ययन करने के पश्चात् कुछ इस प्रकार की जानकारी प्राप्त हुई है कि भूकंप का प्रभाव भूगर्भ की संरचना पर निर्भर करता है। कठोर धरातल पर किए गए निर्माण कमजोर धरातल पर किए गए निर्माणों की तुलना में अधिक स्थिर रह पाते हैं। इसलिए यह जरूरी है कि निर्माण से पूर्व उस जगह को भली प्रकार से जांच परख लिया जाए। बहुत से क्षेत्र निर्माण के अनुकूल होते ही नहीं हैं और यदि वहां निर्माण करना अनिवार्य हो तो क्या सावधानियां बरतनी होंगी यह सोचे बिना ही हम अपनी नासमझी के कारण वहाँ घर बनाकर अपने लिए स्वयं मुसीबत खड़ी कर लेते हैं। ऐसे निर्माण केवल अपने लिए ही नहीं अपितु दूसरों के लिए भी संकट पैदा करते हैं। सभी जानते और समझते हैं कि केवल भवन का ढांचा ही महत्वपूर्ण नहीं होता उसके साथ जुड़ी सारी व्यवस्था महत्वपूर्ण होती है। रास्ते, सड़कें, जलापूर्ति तथा निकास, निर्माणस्थल के आसपास के गुजरने वाले नाले तथा बिजली की लाइनें। और भी कई ऐसी व्यवस्थाएं रहती हैं जो निर्माण पर सीधा प्रभाव डाल सकती हैं। इन सबका पहले से ध्यान रखना जरूरी होता है।

बहुत सी व्यवस्थाएं ऐसी भी हैं जो निर्माणकर्ता के अपने हाथ में नहीं होतीं। इनके लिए दूसरों के सहयोग की जरूरत पड़ सकती है। ऐसे में स्थानीय पंचायत तथा आसपड़ोस के लोगों के साथ तालमेल भी आवश्यक होता है। जब जब इनका समाधान पूर्वाग्रहों के आधार पर या स्वार्थ परक ढंग के किया जाता है तो उससे हमारी सामाजिक व्यवस्था में अशांति व असंतोष पैदा होता है और

संकट बढ़ जाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि इनके समाधान के लिए समुचित सर्वमान्य व्यवस्था का गठन किया जाए। योजनाओं को जन सहभागिता के आधार पर तैयार करना तथा किसी भी संकट के पूर्वाभास के आधार पर सहमति बनाना वर्तमान समय की सबसे बड़ी जरूरत है।

ऐसा भी देखा गया है

कि कई बार भूकंप के दौरान पूरी एहतियात से बनाई गई इमारतें ध्वस्त हो जाती हैं और किसी और जगह पर किसी प्रकार के सुरक्षा के उपाय किए बिना बनी हुई इमारतों

पर कोई भी असर नहीं होता। इससे यही सिद्ध होता है कि भूकंप का प्रभाव काफी हद तक भूमि की ऊपरी परत के गठन के ऊपर भी निर्भर करता है। इसलिए किसी भी निर्माण से पूर्व भूमि की धारण क्षमता की जांच कर लेना अनिवार्य है। भवन की सुरक्षा की पहली गारंटी उसकी नींव है। जैसे हाथ से पकड़ी हुई छड़ी की पकड़ के ऊपर निर्भर करता है कि हम कितनी ताकत से उससे वार कर सकते हैं विल्कुल बैसे ही प्रत्येक भवन का भूकंप की कंपनी को सह पाना इस बात पर निर्भर करता है कि नींव की पकड़ कितनी मजबूत है। वह भूकंप के दौरान कितना संतुलित रह पाता है।

समतल भूमि हो और आस पास के क्षेत्र की भौगोलिक संरचना भी एक जैसी हो तो सुरक्षा के आसार अधिक होते हैं। यह आवश्यक है कि पहले से ही यह तय कर लिया जाए कि कौन से क्षेत्र भवन निर्माण के योग्य हैं तथा उनके लिए किस

प्रकार की नींव एवं निर्माण पद्धति का उपयोग करना सही रहेगा। यह सभी बातें विकास योजना के अंतर्गत बनाई गई नियमावली का महत्वपूर्ण पहलू हैं। खास कर पहाड़ी इलाकों में यह बहुत जरूरी होता है। यह सब कुछ उस स्थिति में लगभग असंभव है जहां भूमि प्राइवेट हो और प्लॉट बेतरतीब हों। इसीलिए इसे

संभव बनाने के लिए जन सहभागिता की वकालत की जाती है। अन्यथा हम निर्माण व्यवस्था में कभी भी कोई भी सुधार नहीं ला सकते। ऐसे में जन सुविधाओं का जुगाड़ करना तथा समुदाय के लिए सुरक्षा सुनिश्चित करना आसान काम नहीं।

हम देख रहे हैं कि करोड़ों रुपयों का खर्चा करके घर बना लेने के पश्चात् भी लोगों को प्रयास सुविधाएं नहीं मिल पातीं। इसमें प्रापटी डीलर तथा बिचौलिया ही लाभ उठाते हैं व्यवस्था को कुछ हासिल नहीं होता। भूकंप के जोखिम से निजात पाने के लिए यह आवश्यक है कि हम भूमि उपयोग पर विशेष ध्यान दें तथा अपनी निर्माण पद्धति में सुधार करें। हमारे राज मिस्त्री तथा अन्य कारीगर लोग कितने जागरूक हैं तथा उन्हें अपने काम की कितनी समझ है। इस बात पर भी काफी कुछ निर्भर करता है कि हमारे निर्माण कितने सुरक्षित होंगे अन्यथा हमारी व्यवस्था के तहसनहस होने के लिए किसी भूकंप की भी आवश्यकता नहीं होगी।

हम देख रहे हैं कि करोड़ों रुपयों का खर्चा करके घर बना लेने के पश्चात् भी लोगों को प्रयास सुविधाएं नहीं मिल पातीं। इसमें प्रापटी डीलर तथा बिचौलिया ही लाभ उठाते हैं व्यवस्था को कुछ हासिल नहीं होता। भूकंप के जोखिम से निजात पाने के लिए यह आवश्यक है कि हम भूमि उपयोग पर विशेष ध्यान दें तथा अपनी निर्माण पद्धति में सुधार करें। हमारे राज मिस्त्री तथा अन्य कारीगर लोग कितने जागरूक हैं तथा उन्हें अपने काम की कितनी समझ है। इस बात पर भी काफी कुछ निर्भर करता है कि हमारे निर्माण कितने सुरक्षित होंगे अन्यथा हमारी व्यवस्था के तहसनहस होने के लिए किसी भूकंप की भी आवश्यकता नहीं होगी।

-पीपी रैणा
लेखक सेवानिवृत्त नगर योजनाकार हैं।

पृष्ठ 1 के शेष

त्रास्दी से बचना है...

ऐसे में विकाशशील देश भारत की तैयारियों को देखें तो जापान के मुकाबले कहीं नहीं टिक पता है। हाल ही में गुजरात में आया भूकंप भारत की तैयारियों की पोल खोलने के लिए काफी है। वहीं हिमाचल प्रदेश जैसे जोन पांच में आने वाले राज्य की हालत तो और भी दयनीय है। यहां बेतरतीब निर्माण और सुस्त सरकारी तंत्र भूकंप से बचाव से ज्यादा इस त्रास्दी के न आने की ही कामना कर सकता है। कांगड़ा का वर्ष 1905 का भूकंप सौ वर्ष से अधिक समय के बाद भी लोगों के जहन से नहीं निकल पाया है। इस बीच आए भूकंप लोगों का आशंकित किए रहते हैं, मगर न तो तंत्र और न ही नागरिक इससे बचने के उपायों को गंभीरता से ले पा रहे हैं। इन्हें कुछ तथ्यों को ध्यान में रखकर भूकंप से जुड़े तथ्यों को आपकें

समक्ष लाने का प्रयास किया गया है।

जानें अपनी धरती...

इसी कारणवश कभी यदि छेद या दरारनुमा जगह उपलब्ध हो जाए तो लावा बाहर आकर ज्वालामुखी की तरह फूट पड़ता है और बाहर आकर वातावरण के प्रभाव के कारण जम जाता है, जो भूखंड इस प्रक्रिया में नीचे धंस जाते हैं सदा के लिए विलुप्त हो जाते हैं। यह प्रक्रिया धरती तथा समुद्र में एक जैसी होती है।

भूकंप से जुड़ी...

भारतीय प्लेट उसके नीचे धंसती गई दोनों का सींध-क्षेत्र ऊपर की ओर उठता चला गया और परिणामस्वरूप हिमालय का जन्म हुआ। टैथीस समुद्र का सारा पानी बह कर निचले क्षेत्रों में चला गया। हिमालय का सारा क्षेत्र ही इन्हीं दो प्लेटों

का सींध-क्षेत्र है जहां दबाव अभी भी लगातार बना हुआ है। जहां-जहां पहाड़ी ढलानों पर भूस्खलन के कारण या निचले क्षेत्रों से अधिक मिट्टी की परत पानी में बह जाने के कारण क्रस्ट की मोटाई कम होती रहती है लावे के संपर्क के अवसर बढ़ते जाते हैं। हमारी वर्तमान असंतुलित एवं अनियोजित भूमि उपयोग व्यवस्था हमें दिनों दिन अधिकाधिक संकटपूर्ण स्थिति की ओर ले जा रही है। ऐसे निर्माण जिनके लिए भूमि कटान की अधिक जरूरत हो या जिनसे भूस्खलन की संभावनाएं अधिक हों भूसंरचनात्मक अंसुलन के कारण घातक हो सकते हैं।

भूगर्भीय एंठन का...

वे काफी निकटता से इसका आभास पा भी लेते हैं तथा अपने शब्दों में सबको समझाने का प्रयास भी करते हैं, लेकिन भौतिकता की अंधी दौड़ में उलझा इंसान उनकी ओर ध्यान नहीं देता। इसका

परिणाम भयानक विनाश होता है। भूकंप सही अर्थों में अचानक नहीं आते। ये परिणाम है भूगर्भ में लगातार चल रही क्रियाओं का। मानव पृथ्वी की सतह पर विपरीत परिस्थितियों के निर्माण से उनकी विभीषिका को बढ़ा देता है। विश्व के अलग-अलग क्षेत्रों में आए भूकंपों के गहन अध्ययन से वैज्ञानिकों ने अनेक तथ्य उजागर किए हैं। पूर्वानुभव के आधार पर कई सिद्धांत प्रतिपादित किए हैं। साधारणतया ये सभी सिद्धांत प्रयोगशालाओं, सेमिनारों तथा कार्यशालाओं तक सीमित रह जाते हैं। राष्ट्रीय महत्व के निर्माण कार्यों या बड़े बजट के भवनों के निर्माण में भले ही इन सिद्धांतों का कुछ हद तक पालन किया जाता हो, लेकिन अभी भी यह सिद्धांत इतने व्यापक नहीं हो पाए हैं कि आम आदमी इनके प्रति जागरूक हो। वैज्ञानिकों का कहना है कि हिमालय क्षेत्र कई कारणों से अति संवेदनशील

क्षेत्र है तथा यहां कभी भी एक बड़ा भूकंप आचानक आ सकता है।

संभव नहीं है...

इसीलिए भूकंप की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए सुरक्षात्मक उपायों को ही अधिक महत्व दिया जाता है। आवश्यक है कि सारी व्यवस्था को इस ढंग से योजनाबद्ध किया जाए।

जानें भूकंप की...

बड़े भूकंपों का प्रभाव लंबी दूरी तक देखा गया। इसी के आधार पर उन्होंने एक स्केल तैयार किया जो भूकंपों की तीव्रता नापने के लिए आज भी उपयोग किया जाता है। इसमें कई प्रकार के तरंगों का वर्णन है तथा अलग-अलग प्रभाव पृथ्वी की सतह पर होता है जिससे हमारे निर्माण प्रभावित होते हैं। रिक्टर स्केल के आधार पर विभिन्न भूकंपों का वर्गीकरण है।



साहित्यिक मंच

जरूरत



उस दिन बड़े रुआंसे अंदाज में अपनी तोतली बोली में

मेरी बिटिया ने पूछा पापा। छत पर जो कबूतर रहता है उसे डराता क्यों है पड़ोसी का कुत्ता बिटिया का हाथ मेरे हाथ में उतेजित हो उठता है गुस्से से मानो मुझे अद्भुत संगीत और अनगिनत कविताएं सुना दी हों उसने तब मैंने महमूसा कबूतरों के शत्रुओं के खिलाफ लड़ना कितना जरूरी है।

आवाज का हथियार

नेवला हो या सांप हो घटारी चिड़िया अपने अंडों की रक्षा के लिए जीत ही लेती है तमाम गुरिल्ला लड़ाइयों अपनी आवाज के हथियारों की पूरी ताकत से।

-स्व. अजीत कुमार

अनजाने में की गलती ने बदल दी जिंदगी

■ सही परामर्श व इलाज के चलते टूटने से बचा परिवार

एचआईवी पीड़ित की सफलता की कहानी



तब आई जब इन्हें पता चला कि इनके दोनों बच्चों एचआईवी पॉजिटिव नहीं हैं। पत्नी की सेवा, परिवार के सहयोग और दवाओं के दम पर इनकी बिखरी जिंदगी धीरे-धीरे पटरी पर लौटने लगी।

खर्चीला और मददगार स्वभाव का कुलदीप हमेशा दूसरों और अपनों के साथ खड़ा रहा। अपनी बहन की खूब धूमधाम से शादी करना उसका सपना था। अपने पैसों से उसने न सिर्फ अपनी बहन बल्कि ससुर की मृत्यु होने के कारण अपनी साली की शादी भी धूमधाम से की। यहीं नहीं अपनी बुआ का घर भी अपने पैसों से बनवाया। पिता की अपंगता की वजह से खूब पढ़ने का अधूरा सपना वह अपने छोटे भाई को पढ़ाकर पूरा कर रहा है। अपनी जिंदगी में आए पतझड़ को दरकिनार कर जिंदगी की बची-खुची खुशियों की फसल को सिंचने का काम भी वह बखूबी कर रहा है। उसके बगीचों में उसकी मेहनत से लगे मीठे सेब कईयों के मुंह में मिठास घोल रहे हैं। आज यह लड़का न सिर्फ अपने घर-परिवार व बच्चों की परवरिश कर रहा है, बल्कि गुंजन के कम्यूनटी केयर सेंटर से जुड़कर तमाम उदास चेहरों की मुस्कान और सहारा भी बना है।

होने का पता चला, उस रात वह और कुलदीप सदमे के कारण कुछ बोल न पाए। तमाम चिंताओं, मौत के डर और समाज की निंदा के बारे में सोचकर उन दोनों ने आंसू नहीं थम पा रहे थे। ऐसे नाजुक दौर में कुलदीप को धर्मशाला के सिद्धबाड़ी में स्थित सामाजिक संस्था गुंजन का साहरा मिला। संस्था द्वारा एचआईवी/एड्स प्रभावितों की सहायता के लिए चलाए जा रहे स्पोर्ट एंड केयर सेंटर के कार्यक्रमों ने उसके नकारात्मक विचार व भय दूर किया और जीने की नई राह दिखाई। फिर दो बच्चों के पिता कुलदीप के परिवार की गमगीन जिंदगी में खुशी फैलाई गई प्रांतियों के हव्ले ने उसे जीते जी बुत बना दिया था। पहाड़ों का निवासी यह लड़का पहले खुद की उदासी-सदमों और जिस्मानी कमजोरी से जुड़ा फिर उसकी गलती का खामियाजा उसकी बीवी को भी भुगतना पड़ा। अपनी पत्नी को इसी बीमारी से ग्रस्त किए जाने की जानकारी पाकर वह और भी टूट गया। कभी खूब हंसने-खिलखिलाने वाली उसकी घर वाली उस मनहूस दिन के बाद फिर खुश न हो पाई। जब उसे खुद के भी एचआईवी पॉजिटिव

बच्चों की जिंदगी में बढ़ रहा अकेलापन

आधुनिकता और आगे निकलने की हौड़ के इस मौजूदा दौर में बच्चों और किशोरों में भावनात्मक अकेलापन बढ़ रहने लगा है। कहने को तो चारों तरफ बहुत हलचल है। ये रफतार का जमाना है, हमने चार कदम चलकर, पीपल की छँया में सुस्ता लेना पाप समझ लिया है। लिहाजा बच्चे भी कहीं खत्म न होने वाली एक अनंत दौड़ में शामिल हो गए हैं। स्कूल के घंटे खत्म हुए कि कोचिंग क्लास जाना है। परीक्षा खत्म हुई और लो फ़िर स्कूल शुरू।

गर्मी की लंबी मस्ती में दिन गुजारने वाली छुटियां अतीत की बात हो गई। आज का बच्चा तो रथों की रेस का घोड़ा है जो हर दम जुता हुआ है। उसकी लगाम अभिभावकों, शिक्षकों और उन शिक्षाविदों के हाथ में है जिन्होंने आज के बच्चों की जिंदगी में छुट्टी का पीरियड ही नहीं बनाया।

बच्चे अपने दोस्त और सहेलियां पहले भी बनाते थे और अब भी बनाते हैं। आज भी उनका कोई एक मित्र होता है जो घनिष्ठ मित्र होता है या दो-तीन मित्रों का ऐसा समूह होता है जो एक दूसरे को समझते, जानते, चाहते हैं। इसके इतर पढ़ाई का बोझ, कुछ कर गुजरने और शीर्ष पर रहने की अपेक्षाओं का बोझ दोस्तों से इनकी भावनात्मक निकटता को फलने-फूलने का समय नहीं देता।

इनका समय एक दूसरे से नोट्स का आदान-प्रदान करने में जितना जाता है उतना समय वे एक-दूसरे से मन की बात करने में नहीं निकाल पाते। संयुक्त परिवार



टूट गए हैं। अब घर पर भी बच्चे समूह में नहीं रहते। पिछले बीस वर्षों में जमाना इतना बदला है कि अक्सर पढ़े-लिखे माता-पिता का भी अपने बच्चों से स्पष्ट जनरेशन गैप होता है। अतः किशोर माता-पिता से मन की बात नहीं कह पाते। उन्हें पता है कि वे और माता-पिता संस्कारों के दो अलग छोरों पर खड़े हैं अतः उन्होंने मन की बात कह भी दी तो मां-बाप पचा नहीं पाएंगे।

आज के किशोरों की दोस्ती वर्चुअल माध्यम पर भी चलती रहती है। बच्चे पर अच्छी प्रोफ़ाइल बनाने और अच्छे स्टेटस डालने का भी दबाव रहता है। आज का बच्चा पीयर प्रेशर में ही बहुत से काम करता है। उसे दोस्तों को दिखाना, मां-बाप की अपेक्षाएं पूरी करनी हैं, उपभोक्ता संस्कृति के अनुरूप जीवन जीना है। आज बचपन और किशोरावस्था जटिलताओं से भर गए हैं।

लिहाजा हर दूसरे-चौथे दिन किसी किशोर अथवा किशोरी द्वारा आत्महत्या कर लेने की खबरें आती हैं। ये खबरें बाकी माता-पिता, शिक्षकों और समाज के लिए खतरे की घंटी होना चाहिए ताकि वे यह सोचें कि बच्चे के लिए कैरियर के जितनी ही महत्वपूर्ण परिवार से मिलने

वाली भावनात्मक सुरक्षा, प्यार और हर हाल में अपनाए जाने का विश्वास भी है। कभी भी बच्चों को यह ताने नहीं मिलना चाहिए कि देखो हम तुम्हारे लिए कितना करते हैं और तुम हो कि अच्छे रिजल्ट नहीं लाते। बच्चों को बार-बार यह

एहसास दिलाना उनमें ग्लानि भाव पैदा करता है और जो अंततः अवसाद में भी परिणित हो सकता है। बच्चे का दिल और बच्चे की दुनिया समझना भी उसकी फीस भरने जितना ही आवश्यक कर्तव्य है।

Addiction is the only PRISON where the locks are on the inside.

नीबू से चार्ज हो गया स्मार्टफोन



जब कभी आपका स्मार्टफोन डिस्चार्ज हो जाए और कहीं आपको फोन चार्ज करने के लिए प्लग न मिले तो बैचने होने की जरूरत नहीं है आप बिना प्लग के फोन चार्ज कर सकते हैं। आपको केवल एक नीबू और आपके चार्जर की जरूरत होगी।

इससे जुड़ा एक वीडियो आजकल सोशल मीडिया में वायर हुआ है। इसके तहत एक नीबू को दो टुकड़ों में काटा और उन टुकड़ों में चार्जर लगा दिया। जैसे ही नीबू में चार्जर लगाया, फोन चार्ज होना शुरू कर देता है। यह इसलिए होता है कि नीबू का रस इलेक्ट्रोलेटिक सॉल्यूशन की तरह काम करता है। इसलिए जब चार्जर का मेटल नीबू के संपर्क में आता है तो आपका फोन चार्ज होने लगता है।

कई लोग इस प्रयोग को नकली बता रहे हैं तो कुछ इसका समर्थन करते नजर आ रहे हैं। इस वीडियो को अब तक 3 करोड़ 67 लाख से ज्यादा लोगों ने देख लिया है।

बैंक अधिकारियों की ट्रेनिंग में खास बातें

बैंकिंग सेक्टर एक परिवर्तनशील सेक्टर है। यहां हर रोज कुछ नया होता रहता है। इसलिए यहां लगातार होने वाली तरह- तरह की ट्रेनिंग का खास महत्व है। जब बैंक में किसी नए उम्मीदवार की भर्ती की जाती है, तो आम तौर पर वह उस संस्थान के बारे में कुछ नहीं जानता। यह संस्थान की जिम्मेदारी होती है कि वह नवनि्युक्त अधिकारी को बैंक के लिए मानव संसाधन में परिवर्तित कर दे। इस मामले में बैंकिंग सेक्टर सर्वश्रेष्ठ सेक्टरों में से एक है, क्योंकि यहां अफसरों को बेहतरीन ट्रेनिंग दी जाती है और ट्रेनिंग का यह सिलसिला पूरे करियर के दौरान चलता रहता है।

■ कैसा होता है प्रशिक्षण

देश के किसी भी विश्वविद्यालय में बैंकिंग का कोई कोर्स उपलब्ध नहीं है। वहीं आईबीपीएस तथा एसबीआई में प्रोवेशनरी ऑफिसर (पीओ) के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता किसी भी विषय में ग्रेजुएशन है। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि नवनि्युक्त प्रोवेशनरी ऑफिसर्स को अच्छा प्रशिक्षण देकर उन्हें बैंकिंग तथा फाइनेंस की बारीकियां समझने के काबिल बनाया जाए। यह प्रशिक्षण अलग-अलग चरणों में अलग-अलग तरह से होता है।

■ इंडक्शन ट्रेनिंग

बैंक में नियुक्ति के बाद अभ्यर्थी को दी जाने वाली यह पहली ट्रेनिंग होती है। इससे नवनि्युक्त अधिकारी को संस्था के ढांचे, उसकी मूलभूत गतिविधियों और वहां रोजमर्रा के कामकाज के बारे में जानकारी मिलती है।

■ इन-सर्विस ट्रेनिंग

ऑफिसर्स को यह ट्रेनिंग करियर के दौरान समय-समय पर दी जाती है। इसमें बैंकिंग क्षेत्र में तात्कालिक गतिविधियों की जानकारी और उनसे संबंधित व्यवहारिक ट्रेनिंग दी जाती है। इसका उद्देश्य यह होता है कि अधिकारी वापस जाकर अपनी शाखा में रोजमर्रा के कामकाज में उन नए तौर-तरीकों को लागू करें।

■ स्पेशलाइज्ड ट्रेनिंग

इस प्रकार की ट्रेनिंग बैंकों में लगातार चलती रहती है। अधिकांश बैंक यह निर्णय अधिकारियों पर ही छोड़ते हैं कि वे अपनी रुचि का क्षेत्र चुनें और उस क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त करें।



■ रिफ्रेशर ट्रेनिंग

इस प्रकार की ट्रेनिंग में बैंक का एचआर विभाग देश भर में फैले विभिन्न कार्यालयों से अधिकारियों को साथ लाता है, ताकि वे आपस में अपने विचारों और अनुभवों को साझा कर सकें। इससे अधिकारियों का दिमाग रिफ्रेश हो जाता है और वे नए उत्साह के साथ अपने काम पर लौटते हैं।

ट्रेनिंग ऑन डेप्युटेशन

इसमें वर्ल्ड बैंक, एशियन डेवलपमेंट बैंक, आईएमएफ, आरबीआई, आयकर विभाग, प्रवर्तन निदेशालय, सीबीआई आदि जैसे संस्थान ट्रेनिंग प्रोग्राम का आयोजन करते हैं और इसमें शामिल होने

के लिए विभिन्न बैंकों के अधिकारियों का चयन किया जाता है। इससे अधिकारियों की सोच और समझ का दायरा बढ़ता है तथा वे अधिक प्रभावशाली तरीके से अपनी नियमित

ड्यूटी निभाने में सक्षम होते हैं। विभिन्न विभागों में पारंगत होने का मौका आम तौर पर बैंक अधिकारियों को अपनी रुचि के क्षेत्रों के बारे में बताने के भरपूर अवसर दिए जाते हैं क्योंकि

अधिकांश बैंकों में अनेक विभाग होते हैं। अधिकारियों को विभिन्न विभागों में काम करने का मौका मिलता है, जैसे क्रेडिट, ऑपरेशंस एंड सर्विसेज, रिकवरी, आईटी, फारिक्स आदि।

सोशल मीडिया पर रितिक-कंगना की जंग

कंगना रणौत और रितिक रोशन के बीच चल रही जंग में इन दिनों दोनों ओर से पुरानी फोटो को हथियारों की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है। हाल ही में एक फोटो सामने आई, जिसमें रितिक और कंगना के बीच काफी नजदीकियां दिखाई दीं। अब एक फोटो सामने आई है, जिसमें रितिक सुजैन और कंगना दोनों के साथ नजर आ रहे हैं।

खबरों की मानें तो पहली फोटो कंगना की पीआर टीम ने रिलीज की थी। इसके जरिए वो ये बताना चाहते थे कि कंगना और रितिक सिर्फ अच्छे दोस्त नहीं थे, इनके बीच इससे कुछ ज्यादा था। इस फोटो के सामने आने के बाद कंगना के वकील रिजवाज सिद्दीकी ने कहा भी कि फोटो से जाहिर होता है कि ये सिर्फ दोस्त नहीं रहे हैं। कुल मिलाकर कंगना ये साबित करना चाह रही हैं कि वो रितिक के साथ रिलेशनशिप में थीं। इसीलिए उन्होंने एक इंटरव्यू के दौरान रितिक को सिली एक्स कहा था।

अब जो दूसरी फोटोज सामने आई हैं, उनमें रितिक, कंगना के साथ-साथ सुजैन के करीब भी नजर आ रहे हैं। इस फोटो के जरिए रितिक की पीआर टीम बताना चाह रही है कि जिस पार्टी का जिक्र कंगना द्वारा जारी किए गए फोटो में हो रहा है, उसमें सुजैन भी मौजूद थीं। रितिक ने इस पार्टी में सिर्फ कंगना के साथ ही नहीं दूसरे



लोगों के साथ भी फोटो खिंचवाए थे।

ऐसा लग रहा है कि इन दिनों रितिक-कंगना के बीच चल रहे विवाद की पेशी सोशल मीडिया में हो रही है। एक पक्ष कुछ फोटोज या ई-मेल सोशल मीडिया में लीक करता है, तो उसके तुरंत बाद दूसरा पक्ष उसकी काट के रूप में कुछ और फोटो पेश करता है। हालांकि मामले की जांच की जिम्मेदारी साइबर क्राइम सेल के हाथों में है, लेकिन अभी तक कंगना ने अपना आधिकारिक बयान भी दर्ज नहीं कराया है। वह मीडिया के सामने

कई बार बयान दे चुकी हैं।

गौरतलब है कि कंगना और रितिक के बीच विवाद तब शुरू हुआ था, जब कंगना ने अपने एक इंटरव्यू के दौरान रितिक को सिली एक्स क ह क र बुलाया था। इसके बाद रितिक ने कंगना को एक कानूनी नोटिस भिजवा दिया था। इसमें रितिक ने मांग की थी कि कंगना उनसे

सार्वजनिक तौर पर माफी मांगे, लेकिन उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया।



गूगल ने लॉन्च किया नया क्रोमकास्ट



गूगल ने भारत में इंटरनेट स्ट्रीमिंग डिवाइस क्रोमकास्ट और क्रोमकास्ट ऑडियो को लॉन्च कर दिया है। इन डिवाइसों को डोंगल की तरह उपयोग किया जा सकता है। इन्हें ई-कॉमर्स वेबसाइट अमेज़न, सैपडॉल और फ्लिपकार्ट से खरीदा जा सकता है। क्रोमकास्ट 2 और क्रोमकास्ट ऑडियो 3,399 रुपये की कीमत में मिल रहा है।

क्रोमकास्ट-2 : क्रोमकास्ट के पिछले वर्जन की ही तरह इस वर्जन में भी साधारण टीवी को स्मार्ट टीवी में बदलने का ऑप्शन है। इससे वाइ-फाई के जरिए बड़ी स्क्रीन पर वीडियो स्ट्रीमिंग की जा सकती है। पिछले क्रोमकास्ट की फ्लैश स्टोरेज 2जीबी थी, जबकि इस बार यह केवल 256 एमबी ही है।

क्रोमकास्ट ऑडियो : क्रोमकास्ट ऑडियो को स्पीकर में लगाया जा सकता है। इसके बाद स्पीकर को स्मार्टफोन या लैपटॉप से भी कनेक्ट किया जा सकता है। यह डिवाइस सावन और विंक म्यूजिक जैसे कई स्ट्रीमिंग ऐप पर काम करता है। इसमें एक मल्टी रूम फीचर है जिसके जरिए एक साथ कई स्पीकर कनेक्ट किए जा सकते हैं। क्रोमकास्ट के जरिए यूजर्स अपने टेलीविजन का उपयोग यूट्यूब और नेटफ्लिक्स जैसी वीडियो सेवाओं के जरिए स्मार्ट टीवी की तरह कर सकते हैं।